विश्वास और बपतिस्मा

''इसलिए कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं। परन्तु उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंत मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं। उसे परमेश्वर ने उसके लोहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित ठहराया, जो विश्वास करने से कार्यकारी होता है'' (रोमियों 3:23-25क)।

''केवल विश्वास'' से उद्धार की शिक्षा में विश्वास रखने वालों का कहना है कि उद्धार के लिए बपतिस्मा आवश्यक नहीं है। उनका तर्क होता है कि उद्धार के लिए परमेश्वर की एकमात्र शर्त के रूप में, केवल मनुष्य का विश्वास जरूरी होता है। यद्यपि वे सैद्धांतिक रूप में तो इस बात को बताते हैं, परन्तु आवश्यक नहीं कि वे इसे पूरी तरह से व्यवहार में भी लाते हों।

यदि उद्धार केवल विश्वास के आधार पर है, तो उद्धार की शर्त के रूप में कोई और बात नहीं सिखाई जानी चाहिए। इसका अर्थ होगा कि बाइबल अध्ययन, सिखाने, मन फिराने, अंगीकार और मन में मसीह को आने के लिए कहने के लिए ''पापी की प्रार्थना'' कहने की भी आवश्यकता नहीं होनी चाहिए।[1] ''केवल विश्वास'' की शिक्षा देने वाले अक़्सर विश्वास में इन बातों को शामिल करते हैं। विश्वास में बपतिस्मे को शामिल क़्यों नहीं किया जाता, जबकि यह ऊपर वर्णित अन्य शर्तों से अधिक बड़ा काम तो नहीं है? बपतिस्मा लेने वाला सक्रिय होकर कुछ नहीं करता, बल्कि वह तो अपने शरीर को पानी के अन्दर रखने और पानी से बाहर लाने के लिए वैसे ही सौंप देता है जैसे यीशु ने क्रूस पर चढ़ाए जाने के समय कोई काम नहीं किया था। उसने क्रूस पर चढ़ाने वालों को अपना शरीर सौंप दिया था। हमारे पापों के लिए उसकी मृत्यु के बाद, उसे दूसरे लोगों ने गाड़ा था और आत्मा के द्वारा वह जिलाया गया था (रोमियों 8:11)।

क़्या विश्वास में आज्ञा मानना शामिल है?

विश्वास के लिए अंग्रेजी के शज़्द ''faith'' और ''believe'' pisteuo के रूपों से मिले हैं, जिन्हें ''भरोसा और आस्था'' के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। इसमें अपने मन से किसी के भरोसे को दिखाना भी शामिल है जो आज्ञा मानने से होता है। आर. बल्टमैन ने *pisteuo* की परिभाषा निज़्न प्रकार से दी है:

> ... ''आज्ञा मानना।'' इब्रानियों 11 अध्याय ज़ोर देता है कि विश्वास करने का

अर्थ आज्ञा मानना है, [पुराने नियम] की तरह रोमि. 1:8; 1 थिस्स. 1:8 (तु. रोमि. 15:18; 16:19) में पौलुस भी, दिखाता है कि विश्वास करने का अर्थ आज्ञा मानना है। रोमि. 1:5 और तु. 10:3; 2 कुरिं. 9:13 में वह विश्वास की आज्ञाकारिता की बात करता है।[2]

विश्वास या प्रतीति के लिए अंग्रेजी भाषा के शब्द "faith" और "believe" मानसिक या भावनात्मक प्रतिक्रियाओं से अधिक का संकेत देते हैं। उनका इस्तेमाल "आज्ञा न मानने," "अवज्ञाकारी," और "अवज्ञा" के विपरीत किया जाता है। ये शब्द यूनानी भाषा के *apeithia* से अनुवादित किए गए हैं।[3] यूहन्ना 3:36 में कहा गया है, "जो पुत्र पर विश्वास करता [यू.: *pisteuo*] है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता [यू.: *apeitheo*], वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है।" *apeitheo* ("नहीं मानता") अर्थात नकारात्मक के विपरीत *pisteuo* ("विश्वास करता है") का इस्तेमाल स्पष्ट प्रमाण है कि "faith" और "believe" शब्दों द्वारा किए गए कार्य का संकेत कार्य करने की प्रेरणा पर ही पूर्ण होता है।

इब्रानियों 3:18, 19 में, एक तुलना है: "और उसने किन से शपथ खाई, कि तुम मेरे विश्राम में प्रवेश करने न पाओगे: केवल उनसे जिन्होंने आज्ञा न मानी [यू.: *apeitheo*] ? सो हम देखते हैं, कि वे अविश्वास [यू.: *apisteo*] के कारण प्रवेश न कर सके" । इस आयत में इस्राएल द्वारा कनान में जाकर इस पर विजय पाने की परमेश्वर की आज्ञा न मानने की बात है। इस्राएल को मसीही लोगों को चेतावनी देने के लिए एक नमूने के रूप में इस्तेमाल किया गया है (इब्रानियों 3:9-11, 16-19) कि उनका "अविश्वासी मन" न हो (इब्रानियों 3:12-15)। इस्राएलियों को दिए गए संदेश का उन्हें कोई लाभ नहीं हुआ "क्योंकि सुननेवाले के मन में विश्वास के साथ नहीं बैठा" (इब्रानियों 4:2)। वे परमेश्वर से प्रतिफल न पा सके क्योंकि उनका विश्वास इतना नहीं था कि वह उन्हें आज्ञा मानने तक ले जाता। इब्रानियों 4:6 कहता है कि वे "आज्ञा न मानने [यू.: *apeithia*] के कारण" परमेश्वर के विश्राम में प्रवेश नहीं कर पाए। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने मसीही लोगों से आग्रह किया कि "उनकी नाईं आज्ञा न मानकर [यू.: *apeithia*]" उनका अनुसरण न करें (इब्रानियों 4:11)। KJV के अनुवाद में [हिन्दी बाइबल में नीचे दी गई टिप्पणी में] इब्रानियों 4:6, 11 के "आज्ञा न मानने" और यूहन्ना 3:36 के "नहीं मानता" के बजाय अनुचित ढंग से apeithia के रूपों का अनुवाद "अविश्वासी" किया है।

इन आयतों से स्पष्ट पता चलता है कि आज्ञा माने बिना विश्वास अधूरा है। विश्वास न करने वाले लोग वही थे जिन्होंने आज्ञा नहीं मानी थी, जबकि विश्वास करने वाले लोग वही थे जिन्होंने आज्ञा मानी थी। आज्ञा मानने तक ले जाने वाला विश्वास ही वह विश्वास था जिसका प्रतिफल दिया गया था।

क्या उद्धार केवल विश्वास से ही है?

शायद मार्टिन लूथर ने एक और ज़्यादती अर्थात अच्छे कर्मों पर आधारित उद्धार की

शिक्षा से संघर्ष करने के लिए "केवल विश्वास" की शिक्षा प्रतिपादित की थी। रोमियों 3:28 के अपने अनुवाद में उसने "faith" के बाद "alone" जोड़ दिया। साज़्प्रदायिक कलीसिया के धर्मसार की एक पुस्तक, *द बुक ऑफ़ डिसिप्लिन* में लिखा है, "फलत:, केवल विश्वास से हमारा धर्मी ठहराया जाना, एक सुप्रभावकारी शिक्षा है, और सांत्वना से भरी हुई है।"[4]

बाइबल न तो "केवल कर्मों" से और न ही "केवल विश्वास" की, बल्कि "केवल, विश्वास जो प्रेम के द्वारा प्रभाव करता है" (गलातियों 5:6) की शिक्षा देती है। इब्रानियों 11:6 में यह सच्चाई प्रस्तुत की गई है: "और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, ज़्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले को विश्वास करना चाहिए, कि वह है; और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है।"[5] केवल यही विश्वास करना काफ़ी नहीं है कि परमेश्वर है, बल्कि उसे प्रसन्न करने के लिए उसे "खोजना" भी आवश्यक है। "खोजने" के लिए प्रयास आवश्यक है।

याकूब ने संकेत दिया कि दुष्टात्माओं को इतना विश्वास है कि वे भय से कांपते हैं (याकूब 2:19)। उसने कहा था, "वैसे ही विश्वास भी, यदि कर्म सहित न हो तो अपने स्वभाव में मरा हुआ है" (याकूब 2:17; आयतें 20, 26 भी देखिए)। परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी ठहरना केवल विश्वास से ही नहीं हो सकता: "सो तुम ने देख लिया कि मनुष्य केवल विश्वास से ही नहीं, बरन कर्मों से भी धर्मी ठहरता है" (याकूब 2:24)।

यीशु में विश्वास करना आवश्यक है ज़्योंकि यीशु की आज्ञा केवल उसमें विश्वास रखने पर ही मानी जा सकती है (यूहन्ना 3:36)। मान लीजिए कि एक व्यज़्ति किसी दूर देश से एक मित्र को मिलने जा रहा था और बीमार हो गया। उसने डॉज़्टर के पास जाने से इन्कार कर दिया, ज़्योंकि उसे पता नहीं था कि ज़्या वह किसी डॉज़्टर पर भरोसा करे। परन्तु जब उसके मित्रों ने उसे एक डॉज़्टर के बारे में बताया, तो उसने उसके पास जाकर प्रसन्नतापूर्वक उसकी सलाह से दवाई ले ली ज़्योंकि उसे डॉज़्टर पर विश्वास था। यीशु पर विश्वास करने वालों की भी यही स्थिति है। जो लोग उस पर विश्वास करते हैं, वे उसकी बात मानेंगे (मज़्ी 7:24-27) और अनन्त उद्धार को पाएंगे (इब्रानियों 5:9)।

ज़्या उद्धार कर्मों से होता है?

कुछ लोगों का निष्कर्ष है कि "विश्वास" और "कर्मों" के सज़्बन्ध में पौलुस और याकूब का अपनी शिक्षा पर विवाद था (रोमियों 3:28; याकूब 2:24)। यदि पौलुस और याकूब एक ही प्रकार के कर्मों के बारे में लिख रहे थे, तो हम में उनकी बात में एक निराशाजनक विरोध दिखाई देना था। परन्तु पौलुस धर्मी ठहराए जाने के लिए अपने किए कर्मों की बात कर रहा था जबकि याकूब विश्वास पर आधारित कामों के सज़्बन्ध में लिख रहा था जिसमें यीशु ने धार्मिकता प्रदान की है।

कर्मों के इन दो प्रकारों का एक अच्छा उदाहरण यरीहो की दीवारों के गिरने में देखा जाता है। यरीहो की दीवारें कैसे गिरीं? परमेश्वर और केवल परमेश्वर के काम से। वे इस्राएलियों के आगे बढ़ने या चिल्लाने के शोर से नहीं गिर सकती थीं। यदि यरीहो की दीवारें

इस्राएलियों के कर्मों के कारण गिरतीं, तो दीवारों को गिराने के लिए लोगों ने दीवारों को तोड़ने के यंत्रों, गैंतियों और बेलचों का इस्तेमाल किया होता। यह लिखते हुए कि "न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे" (इफिसियों 2:9) पौलुस के कहने का अर्थ इस प्रकार का कर्म था।

"विश्वास ही से यरीहो की शहरपनाह, जब सात दिन तक उसका चक्कर लगा चुके तो वह गिर पड़ी" (इब्रानियों 11:30)। विश्वास के आधार पर, इस्राएल का कार्य, उन कर्मों का एक उदाहरण है जिनकी चर्चा याकूब कर रहा था। उनका कार्य परमेश्वर की प्रतिज्ञा में विश्वास पर आधारित था, न कि अपने बल पर।

बपतिस्मे को आशिषें देने वाले कर्मों की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। विश्वास, मन फिराव और अंगीकार की तरह, बपतिस्मा भी अपने आप में पाप मिटाने की कोई योग्यता नहीं रखता। यदि बपतिस्मा अपने आप किया गया कोई कर्म होता, तो इसे उद्धार और पापों की क्षमा में से निकाला जा सकता था। पापों को मिटाने की शक्ति पानी में, बपतिस्मे के या बपतिस्मा लेने के लिए अपने आपको समर्पित करने वाले के कार्य में नहीं है। वह शक्ति केवल यीशु के लहू में ही है (मत्ती 26:28; इब्रानियों 9:22)। बपतिस्मा भी यरीहो की दीवारें गिराने के लिए इस्राएलियों द्वारा किए गए काम की तरह ही है। बपतिस्मा लेने या देने वाले के किसी कार्य या क्रिया से यह आशीष नहीं मिल सकती।

परमेश्वर ने इस्राएल की संतान को तब तक आशीष नहीं दी जब तक उसकी प्रतिज्ञा में विश्वास करके उन्होंने उसके निर्देश को नहीं माना। इसे परमेश्वर ने उस विश्वास के नमूने के रूप में दिया है जिसका वह प्रतिफल देगा (इब्रानियों 11:30)।

बपतिस्मे की क्रिया इससे जुड़ी हुई है। पौलुस ने लिखा है, "और उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए, और उसी में परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास करके, जिस ने उस को मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे" (कुलुस्सियों 2:12)। इसी प्रकार, परमेश्वर ने लोगों के विश्वास और उसकी इच्छा को पूरा करने के लिए आज्ञा मानने के कारण दीवारें गिराकर इस्राएलियों को उजर दिया। परमेश्वर ने जैसे उनके आगे बढ़ने, शोर मचाने और नरसिंगे फूंकने के लिए पुरस्कार दिया (यहोशू 6:1-20) वैसे ही बपतिस्मे में यीशु के साथ गाड़े गए पर वह हमारे पापों को मिटाने के परमेश्वर के काम में हमारे विश्वास के कारण भी हमारे पाप क्षमा करेगा (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38; 22:16; कुलुस्सियों 2:12, 13)।

इस्राएलियों के कार्यों में ऐसा कुछ नहीं था जिससे उन्हें पुरस्कार मिल सके और न ही हमारे बपतिस्मा लेने में कुछ ऐसी योग्यता है जिससे हमारा उद्धार हो सके। उन्हें उनके किसी कर्म के कारण आशीष नहीं मिली थी, और न ही हमें हमारे किसी प्रकार के कर्म से आशीष मिलती है। परन्तु जब तक इस्राएलियों ने आज्ञा मानकर परमेश्वर की प्रतिज्ञा में विश्वास नहीं किया तब तक उन्हें पुरस्कार नहीं मिला; उसी प्रकार जब तक हम बपतिस्मे द्वारा परमेश्वर की प्रतिज्ञा में अपना विश्वास नहीं दिखाते तब तक हमें पुरस्कार नहीं मिलता। हमारा उद्धार हमारे कर्मों से नहीं होता। हम अपना उद्धार अपने आप नहीं पा सकते हैं,

ज़्योंकि वह तो क्रूस पर यीशु ने पूर्ण कर दिया था। हमारा उद्धार उस क्षमा को पाने के लिए विश्वास से प्रेरित काम द्वारा होता है जो क्रूस पर उसकी मृत्यु से उत्पन्न हुआ था।

बपतिस्मा हमारे द्वारा किया गया कर्म नहीं है। अपने आपको डुबोने के बजाय हम किसी दूसरे के आगे झुकते हैं जो हमें पानी में गाड़ता है। किसी भी अर्थ में बपतिस्मा हमारे द्वारा किया गया कर्म नहीं है; बल्कि, यह कुछ ऐसा है जो कोई हमारे लिए करता है। हम बपतिस्मे के लिए समर्पण करते हैं ज़्योंकि हमारा विश्वास है कि बपतिस्मे में परमेश्वर हमारे पापों को क्षमा करने का काम करता है (कुलुस्सियों 2:12, 13), न कि इस कारण कि हम मानते हैं कि बपतिस्मे में हमारे पापों को क्षमा करने की कोई योग्यता है। 19वीं शताज़्दी में कलीसिया की बहाली की लहर के एक अगुवे, अलेग्ज़ेंडर कैंपबेल ने लिखा था:

> मुर्दे न तो अपने आपको गाड़ते हैं और न ही अपने आप जीवित होते हैं। बपतिस्मे में हम अपनी रज़ामंदी देने को छोड़कर शेष सब बातों में निष्क्रिय होते हैं। हमें कोई दूसरा व्यज़्ति गाड़ता है और जिलाता है। इसलिए, बपतिस्मे के किसी भी दृष्टिकोण से इसे शुभ कर्म नहीं कहा जा सकता। इसलिए, हमारे आत्मिक सज़्बन्ध पर बपतिस्मे का जो भी प्रभाव हो, वह हमारे काम के किसी गुण के कारण नहीं होगा; न प्राप्त किए जाने वाले के कारण, बल्कि केवल एक सहायक और हामी भरने वाला कारण है, जिससे हम "मसीह को पहनते" और औपचारिक रूप से उसके साथ मिलने के साथ मन में, उसके साथ वाचा में प्रवेश करते हैं, और अपने आपको उसकी मृत्यु, गाड़े जाने, और जी उठने के साथ मिलाते हैं। इसी कारण प्रेरितों ने कहा है, "तुम में से जितनों ने मसीह का (में) बपतिस्मा लिया उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया" – "मसीह को पहिन लिया है।"

ज़्या विश्वास बपतिस्मे से जुड़ा है?

यदि विश्वास को बपतिस्मे से अलग किया जा सकता है, तो उद्धार के लिए बपतिस्मे की आवश्यकता नहीं है; ज़्योंकि उद्धार का आधार विश्वास ही है। परन्तु, बाइबल बपतिस्मे को बड़ी मज़बूती से जोड़ती है (मरकुस 16:16; प्रेरितों 8:12, 13; 18:8; गलतियों 3:26, 27; कुलुस्सियों 2:12)। इस बात पर द न्यू जरूसलेम बाइबल का वाज़्य सही है:

> बपतिस्मा विश्वास के विपरीत नहीं बल्कि इसके साथ चलता है, ... और बपतिस्मे के समारोह के फलदायक संकेत से इसे बाहरी अभिव्यज़्ति मिलती है। इस कारण पौलुस विश्वास और बपतिस्मे का एक ही प्रभाव बताता है (तु. रोमि. 6:3–9 और गला. 2:16–20)।[7]

रोमियों 6 अध्याय पर टिप्पणी करते हुए, डगलस मू ने लिखा है, "जैसा विश्वास को हमेशा बपतिस्मे तक ले जाने के लिए माना जाता है, वैसे ही बपतिस्मा अपनी मान्यता के लिए विश्वास को मानता है। फिर, 3–4 आयतों में हम पहले से विश्वास मात्र आत्मा के दान का पूर्वानुमान लगाते हुए मान सकते हैं कि बपतिस्मा मनपरिवर्तन के पहल के पूर्ण अनुभव के लिए है।"[8]

इसी तरह, परमेश्वर की आशिषें विश्वास से ही मिलती हैं, परन्तु केवल उचित कार्य होने के बाद। हाबिल ने सही बलिदान भेंट किया, नूह ने जहाज बनाया, इब्राहीम ने परमेश्वर की आज्ञा मानी और इस्राएलियों ने यरीहो के चक्कर काटे (इब्रानियों 11:4-8, 30)। इसी प्रकार उद्धार को विश्वास से जोड़ा गया है पर बपतिस्मे के बाद (मरकुस 16:16; 1 पतरस 3:21)। बाइबल में किसी भी ऐसे व्यक्ति को कोई आशीष नहीं दी गई जिसने, परमेश्वर द्वारा कार्य करने की बात कहने पर विश्वास से परमेश्वर के वचन को न माना हो। परमेश्वर ने जब कार्य करने की आज्ञा दी, तो उसने चाहा कि आशीष देने की प्रतिज्ञा से पहले विश्वास हो। बपतिस्मा लेते समय पापों की क्षमा की परमेश्वर की प्रतिज्ञा में विश्वास ही वह नियम है अर्थात बाइबल के अनुसार विश्वास होने का यह कोई अपवाद नहीं है।

सारांश

विश्वास जिसका प्रतिफल परमेश्वर देता है उसमें वह भरोसा है जो हमें उसकी इच्छा मानने के लिए प्रेरित करता है। बपतिस्मा लेते समय परमेश्वर के कार्य में विश्वास ही है जिसका प्रतिफल परमेश्वर पापों की क्षमा के साथ देगा। बिना विश्वास के किया गया कोई भी काम परमेश्वर को नहीं भाता (इब्रानियों 11:6); इसलिए बपतिस्मा परमेश्वर की नज़र में तभी मान्य है जब यह विश्वास से लिया गया हो।

हमारा उद्धार बपतिस्मा लेने पर होता है (मरकुस 16:15, 16), यदि हम इस सुसमाचार पर कि यीशु हमारे पापों के लिए मरा (1 कुरिन्थियों 15:1-3) विश्वास करते हैं। रॉबर्ट ब्रेचर और यूजिन निडा नामक अनुवादकों ने इस वाज़्यांश के सज़्बन्ध में कि "जिसने विश्वास किया उसने बपतिस्मा ले लिया है" लिखा है, "... दोनों कृदंतों का संचालक एकमात्र निश्चयवाचक उपपद उद्धार पाने वाले व्यज़्ति का वर्णन करने के लिए दोनों क्रियाओं को जोड़ता है; वाज़्यांश का अनुमान 'बपतिस्मा पाया हुआ विश्वासी' हो सकता है।"[9] यही वह व्यज़्ति है जिसका "उद्धार होगा।"

विश्वास के बिना बपतिस्मा मान्य नहीं है और न विश्वास ही मान्य है जब तक कि यह परमेश्वर की इच्छा के अनुसार व्यज़्त न किया गया हो। बपतिस्मा लेकर हम अपने विश्वास को व्यज़्त करते हैं कि यीशु गाड़ा गया था और जी उठा, ज़्योंकि हम उसके साथ मिलने के लिए और सदा तक उसके साथ रहने के लिए गाड़े जाने और जी उठने की उसी क्रिया में अपने आप को देते हैं। जब हमें उसके लहू, गाड़े जाने और पुनरुत्थान में विश्वास है तो हमें बपतिस्मे में उसके साथ गाड़े जाने से उस विश्वास को व्यज़्त करना आवश्यक है।

पाद टिप्पणियां

[1]"पापी द्वारा की जाने वाली प्रार्थना" बार-बार करना पवित्र शास्त्र की शिक्षा तो नहीं है, परन्तु अधिकतर वे लोग इसकी शिक्षा देते हैं जो दावा करते हैं कि उद्धार "केवल विश्वास" से ही होता है। प्रार्थना कहने से

कोई गैर मसीही परमेश्वर के अनुग्रह में नहीं आ सकता, ज़्योंकि पौलुस ने हनन्याह द्वारा उसे ''अपने पाप धो डाल'' कहने से कई दिन पहले प्रार्थना की थी (प्रेरितों 9:10, 11; 22:16)। [2]*थियोलोजिक डिज़्शनरी ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट,* सं. गरहर्ड किटल एण्ड गरहर्ड फ्रेड्रिच, अनु. व सं. ज्योफरी डज़्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: Wm. B. ईर्डमैंस पज़्लिशिंग कं., 1985), 854 में आर. बल्टमन, ''*pisteuo.*'' [3]''आज्ञा न मानने'' के रूप में *apeithia* का इस्तेमाल छह बार हुआ है: *apeitheo* का अनुवाद एक बार ''विश्वास न किया,'' तेरह बार ''आज्ञा न मानने वाला'' हुआ है *Apeithes* का छह बार अनुवाद ''अवज्ञाकारी'' हुआ है। न्यू अमेरिकन स्टेंडर्ड बाइबल के विपरीत जो इन शज़्दों का अनुवाद बार-बार ''disobey'' करता है, अधिकतर मामलों में किंग जेज़्स वर्ज़न में ''disobey,'' ''disbelieve'' या ''unbelief'' हुआ है। [4]*द बुक ऑफ़ डिसिप्लिन ऑफ़ द यूनाइटेड मैथोडिस्ट चर्च* (नैशविल्ले: यूनाइटेड मैथोडिस्ट पज़्लिशिंग हाउस, 1976), 57. [5]हो सकता है कि विश्वास करने वालों में से भी कई परमेश्वर की संतान न हों, परन्तु उन्हें ''परमेश्वर के संतान होने का अधिकार है'' (यूहन्ना 1:12)। यूहन्ना 12:42 कहता है, ''तौभी सरदारों में से भी बहुतों ने उस पर विश्वास किया, परन्तु फरीसियों के कारण प्रगट में नहीं मानते थे, ऐसा न हो कि आराधनालय में से निकाले जाएं।'' बेशक ये हाकिम विश्वास करते थे, परन्तु यीशु पिता के सामने उनका इन्कार करेगा उन्होंने उसका अंगीकार प्रभु के रूप में नहीं किया (देखिए मज़्ती 10:33; रोमियों 10:9, 10)। [6]अलेग्ज़ेंडर कैज़्पबेल, *क्रिश्चियन बेपटिज़्म विद इट्स एंटिसिडेंट्स एण्ड कंसिकुयंट्स* (नैशविल्ले: मेकुइड्डी प्रिंटिंग कं. 1913), 205. [7]हैनरी वांसब्रो, सामा. संस्क. द न्यू जरूसलेम बाइबल (न्यू यॉर्क: डबलडे, 1985), 1875, n6a. [8]डगलस जे. मू., *द एपिस्टल टू द रोमन्स,* द न्यू इंटरनेशनल कमैन्ट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट, सामा. संस्क. नेड बी. स्टोनहाउस, एफ़. एफ़. ब्रूस, एण्ड गोर्डन डी. फी (ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: Wm. B. ईर्डमैंस पज़्लिशिंग कं., 1996), 366. [9]राबर्ट जी. ब्रचर व यूजीन ए. काइडा, *ए ट्रांसलेटर 'स हैंडबुक ऑन द गॉस्पल ऑफ़ मार्क* (न्यू यॉर्क: यूनाइटेड बाइबल सोसायटीज़, 1961), 511.

विश्वास एवं परमेश्वर के अनुग्रह की आशीष

उद्धार करने वाले परमेश्वर के अनुग्रह तक हमारी पहुंच विश्वास द्वारा होती है: (रोमियों 5:1, 2)। अनुग्रह में विश्वास के आधार पर सशर्त पहुंचा जाता है; और विश्वास कार्य करने से संपूर्ण होता है (याकूब 2:22)।

अनुग्रह मसीह में ही है (2 तीमुथियुस 2:1), जिसमें हम बपतिस्मा लेकर प्रवेश करते हैं (रोमियों 6:3)। विश्वास से हम बपतिस्मे के समय अनुग्रह में और मसीह में प्रवेश करते हैं, जहां अनुग्रह है। ज़्योंकि बपतिस्मे के समय ही हम मसीह में प्रवेश करते हैं, इसलिए यही वह समय भी है जब हम परमेश्वर के अनुग्रह में प्रवेश करते हैं जो हमारा उद्धार करता है (इफिसियों 2:8)।